जीव के भेद, बहिरात्मा और उत्तम अन्तरात्मा का लक्षण

www.JainKosh.org

www.fppt.info

बहिरातम, अन्तर आतम, परमातम जीव त्रिधा है ।
देह जीव को एक गिने बहिरातम तत्त्वमुधा है ॥
उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के अन्तर-आतम ज्ञानी ।
द्विविध संग बिन शुध उपयोगी, मुनि उत्तम निजध्यानी॥४॥

- त्रिधा= तीन प्रकार के
- देह जीव को= शरीर और आत्मा को
- एक गिने= एक मानते हैं, वे
- तत्त्वमुधा= यथार्थ तत्त्वों से अजान अर्थात् मिथ्यादृष्टि हैं ।
- त्रिविध= तीन प्रकार के हैं ।
- द्विविध= अंतरंग तथा बहिरंग ऐसे दो प्रकार के
- संग बिन= परिग्रह रहित
- शुध उपयोगी= शुद्ध उपयोगी
- उत्तम= उत्तम अन्तरात्मा हैं

www.JainKosh.org
www.fppt.info

बहिरातम, अन्तर आतम, परमातम जीव त्रिधा है ।
देह जीव को एक गिने बहिरातम तत्त्वमुधा है ॥

आत्मा 3 प्रकार के हैं–बहिरात्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा

जो शरीर और आत्मा को एक मानते हैं, उन्हें बहिरात्मा कहते हैं;

वे तत्त्वमूढ़ मिथ्यादृष्टि हैं ।

www.JainKosh.org

www.fppt.info

उत्तम मध्यम जघन त्रिविध के अन्तर-आतम ज्ञानी ।
द्विविध संग बिन शुध उपयोगी, मुनि उत्तम निजध्यानी॥४॥

जो शरीर और आत्मा को अपने भेदविज्ञान से भिन्न-भिन्न मानते हैं, वे अन्तरात्मा अर्थात् सम्यग्दृष्टि हैं ।

अन्तरात्मा के तीन भेद हैं
उत्तम, मध्यम और जघन्य ।

उनमें दोनों प्रकार के परिग्रह रहित से शुद्ध-उपयोगी आत्मध्यानी दिगम्बर मुनि उत्तम अन्तरात्मा हैं ।

www.JainKosh.org

www.fppt.info

आत्मा के भेद (अवस्था अपेक्षा)

बहिरात्मा

अन्तरात्मा

परमात्मा

बहिरातम, अन्तर आतम, परमातम जीव त्रिधा है ।

www.JainKosh.org

आत्मा तो अखण्ड होता है। उसके भेद नहीं होते।

ये भेद श्रद्धा, ज्ञान और चारित्र गुण की पर्यायों की अपेक्षा होते हैं

बहिरात्मा किसे कहते हैं?

बहि:+आत्मा= बाह्य पदार्थों को ही आत्मा, अपना मानने वाला

www.JainKosh.org

www.fppt.info

बहिरात्मा - अन्य नाम

अज्ञानी

मूढ़

मिथ्यादृष्टि

बहिरात्मा

बहिरात्मा कैसा होता है?

स्वयं को बाह्य पदार्थों का स्वामी, कर्ता-धर्त्ता मानता है

शरीर को आत्मा मानता है

कर्मों को सर्वथा अपना मानता है

रागादि पर्यायों में अपनत्व करता है

www.JainKosh.org

www.fppt.info

अन्य पदार्थों को अपना कैसे मानता है?

अन्य चेतन पदार्थों को अपना मानता है,

- जैसे- ये मेरे बच्चे, मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरी माता

अन्य अचेतन पदार्थों को अपना मानता है,

- जैसे- मेरी गाड़ी, मेरा धन, मेरे कपड़े

www.JainKosh.org

www.fppt.info

स्वयं को बाह्य पदार्थों का कर्ता-धर्त्ता कैसे मानता है?

मैंने पुत्र को पढ़ाया,

मैंने घर बनाया,

मैंने धन कमाया,

मैंने बच्चों को संस्कार डाले

www.JainKosh.org

www.fppt.info

शरीर को आत्मा कैसे मानता है?

शरीर की उत्पत्ति में अपनी उत्पत्ति मानता है-

- जैसे आज मेरा जन्मदिन है ।

शरीर के नाश में अपना नाश मानता है-

- मैं बीमार हूँ, थोड़े दिन में मर जाऊँगा।

www.JainKosh.org

www.fppt.info

रागादि पर्यायों में अपनत्व कैसे करता है?

मैं हँसमुख हूँ,

मैं क्रोधी हूँ,

मैं बहुत अच्छा ठग हूँ

मैं लोभी हूँ

www.JainKosh.org

www.fppt.info

बहिरात्मा की कैसी बुद्धि होती है?

पर में.....

एकत्व
(ये मैं हूँ)

ममत्व
(ये मेरे हैं)

www.JainKosh.org

www.fppt.info

अंतरात्मा किसे कहते हैं?

अंत:+आत्मा=
जो आत्मा में
ही अपनापन
माने

www.JainKosh.org

www.fppt.info

अंतरात्मा क्या करता है?

भेद-विज्ञान के बल से

आत्मा को देहादि से भिन्न

ज्ञान और आनंद स्वभावी

जानता | मानता | अनुभव करता है

www.fppt.info

अंतरात्मा - अन्य नाम

ज्ञानी

सम्यग्दृष्टि

अंतरात्मा

www.JainKosh.org

www.fppt.info

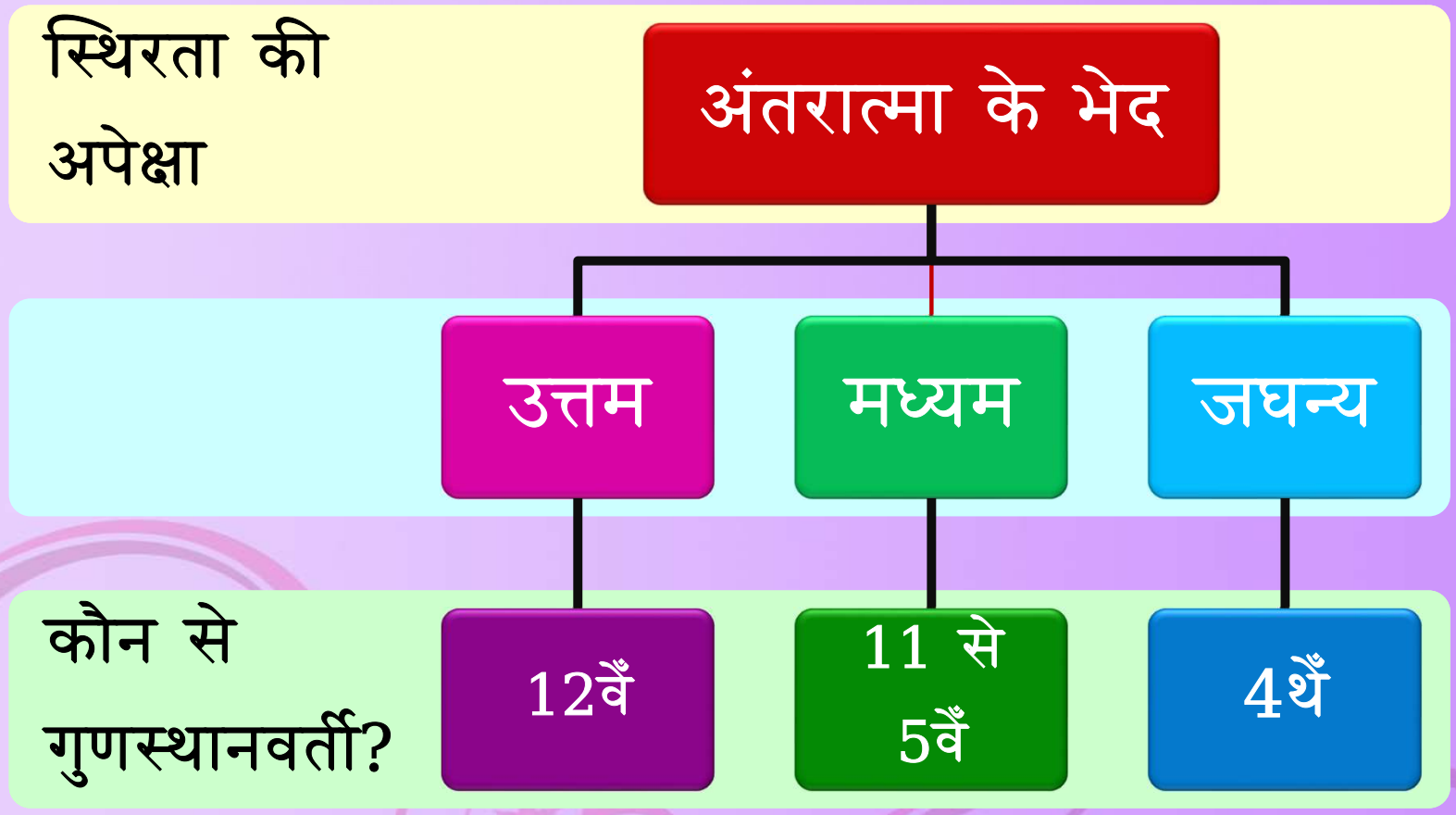

www.JainKosh.org

www.fppt.info

उत्तम अन्तरात्मा

- 12 वें गुणस्थानवर्ती
- पूर्ण वीतरागी
- अंतरंग और बहिरंग परिग्रह से रहित
- भाव कर्मों से रहित
- शुद्धोपयोगी मुनिराज
- नियम से 1 अन्तर्मुहुर्त बाद परमात्मा बनने वाले हैं

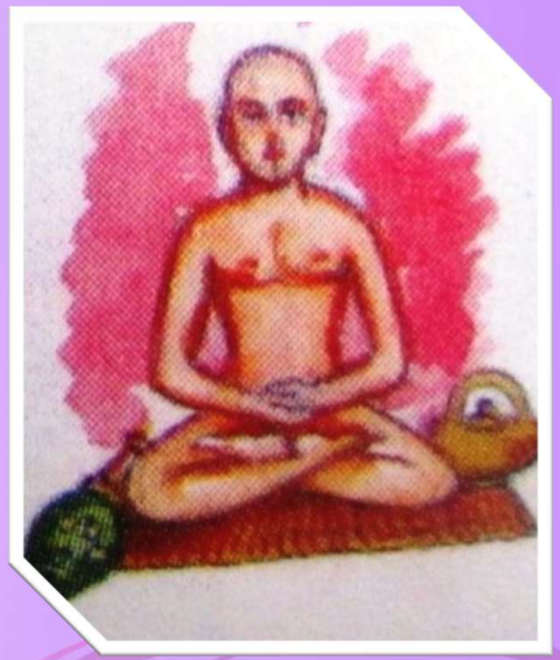

www.JainKosh.org

www.fppt.info

जीव के भेद-उपभेद

मध्यम और जघन्य अन्तरात्मा तथा सकल परमात्मा

www.JainKosh.org

www.fppt.info

मध्यम अन्तर-आतम हैं जे देशव्रती अनगारी।
जघन कहे अविरत-समदृष्टि, तीनों शिवमग चारी॥
सकल निकल परमातम द्वैविध, तिनमें घाति निवारी।
श्री अरिहन्त सकल परमातम, लोकालोक निहारी ॥५॥

- देशव्रती= पंचम गुणस्थानवर्ती सम्यग्दृष्टि श्रावक
- अनगारी= अन्तरंग और बहिरंग परिग्रह रहित
- अविरत= व्रतरहित
- शिवमगचारी= मोक्षमार्ग पर चलनेवाले हैं
- द्वैविध= दो प्रकार के
- तिनमें= उनमें
- निवारी= नाश करनेवाले
- सकल= शरीर सहित
- निहारी= जानने-देखनेवाले

www.JainKosh.org

www.fppt.info

मध्यम अन्तर-आतम हैं जे देशव्रती अनगारी ।
जघन कहे अविरत-समदृष्टि, तीनों शिवमग चारी ॥
सकल निकल परमातम द्वैविध तिनमें घाति निवारी ।
श्री अरिहन्त सकल परमातम लोकालोक निहारी ॥५॥

व्रती सम्यग्दृष्टी श्रावक और सर्व परिग्रह से रहित दिगम्बर मुनिराज मध्यम अन्तरात्मा है

अव्रती सम्यग्दृष्टी श्रावक जघन्य अन्तरात्मा है

परमात्मा सकल और निकल के भेद से 2 प्रकार के होते हैं

अरहंत परमेष्ठी सकल परमात्मा हैं, जिनके घातिया कर्मों का नाश हो चुका है तथा जो सर्वज्ञ हैं

www.JainKosh.org

fppt.info

जघन्य अन्तरात्मा

- सम्यग्दृष्टि है
- स्वरूप स्थिरता जिसे प्रगट हुई है
- किन्तु व्रतादि रूप चारित्र प्रगट नहीं हुआ है

www.JainKosh.org

www.fppt.info

कैसा है वह?

- मोक्षमार्गी है
- स्वच्छंद प्रवृत्तियों से रहित है
- एकदेश अतीन्द्रिय आनंद का भोक्ता है
- ज्ञानी तो है, पर व्रती नहीं है

www.JainKosh.org

www.fppt.info

मध्यम अंतरात्मा किसे कहते हैं

उत्तम और जघन्य दोनों के मध्य के

- ✓ मुनिराज (6th से 11th गुणस्थान)
- ✓ व्रती श्रावक (5th गुणस्थान)

www.JainKosh.org

www.fppt.info

परमात्मा किसे कहते हैं?

परम+आत्मा=
उत्कृष्ट आत्मतत्त्व
जिनकी पर्याय
में पूर्णतया प्रगट
हो गया हो

www.JainKosh.org

www.fppt.info

अर्थात्

- अपने ज्ञायक स्वभाव में पूर्णतया स्थिर
- पूर्ण वीतरागी
- सर्वज्ञ
- 13-14 गुणस्थान वाले अरहंत परमेष्ठी, सिद्ध परमेष्ठी

www.JainKosh.org

www.fppt.info

निकल परमात्मा का लक्षण तथा परमात्मा के ध्यान का उपदेश

www.JainKosh.org

www.fppt.info

ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्ममल-वर्जित सिद्ध महन्ता ।
ते हैं निकल अमल परमातम भोगैं शर्म अनन्ता ॥
बहिरातमता हेय जानि तजि, अन्तर आतम हूजै ।
परमातम को ध्याय निरन्तर जो नित आनन्द पूजै॥६॥

- ज्ञानशरीरी= ज्ञानमात्र जिनका शरीर है ऐसे
- त्रिविध= द्रव्यकर्म, भावकर्म तथा नोकर्म
- कर्ममल= कर्मरूपी मैल से
- वर्जित= रहित,
- महन्ता= महान
- अमल= निर्मल और
- अनन्त= अपरिमित
- शर्म= सुख
- भोगैं= भोगते हैं
- बहिरातमता=बहिरात्मपने को
- हेय= छोड़ने योग्य
- जानि= जानकर और
- तजि= उसे छोड़कर
- हूजै= होना चाहिए
- ध्याय= ध्यान करना चाहिए;
- पूजै= प्राप्त किया जाता है

www.JainKosh.org

www.fppt.info

ज्ञानशरीरी त्रिविध कर्ममल-वर्जित सिद्ध महन्ता ।
ते हैं निकल अमल परमातम भोगैं शर्म अनन्ता ॥
बहिरातमता हेय जानि तजि, अन्तर आतम हूजै ।
परमातम को ध्याय निरन्तर जो नित आनन्द पूजै॥६॥

औदारिक आदि शरीर रहित, शुद्ध ज्ञानमय, द्रव्य-भाव-नोकर्म रहित, निर्दोष और पूज्य सिद्ध परमेष्ठी 'निकल' परमात्मा कहलाते हैं;

वे अक्षय अनन्तकाल तक
अनन्तसुख का अनुभव करते हैं ।

इन तीन में बहिरात्मपना मिथ्यात्वसहित होने के कारण हेय है, इसलिये आत्महितैषियों को चाहिए कि उसे छोड़कर,

अन्तरात्मा बनकर
परमात्मपना प्राप्त करें।

www.fppt.info

परमात्मा

सकल

निकल

www.JainKosh.org

www.fppt.info

कल= शरीर

स+कल= शरीर सहित → अरहंत

नि+कल= शरीर रहित → सिद्ध

www.JainKosh.org

www.fppt.info

सकल परमात्मा

अरहंत

4 घाति कर्मों से रहित

निकल परमात्मा

सिद्ध

8 कर्मों से रहित

www.JainKosh.org

www.fppt.info

सिद्ध परमात्मा कैसे हैं

1. ज्ञान शरीरी
2. 3 प्रकार के कर्मों से रहित
3. महान
4. अमल (द्रव्य-भाव मल रहित)
5. अनन्तसुख का अनुभव करने वाले
6. निकल परमात्मा

www.JainKosh.org

www.fppt.info

3 प्रकार के कर्म

भाव कर्म

- जीव के जिन मोह-राग-द्वेष के भावों से कर्म बंधते हैं, वे भाव कर्म हैं

द्रव्य कर्म

- ज्ञानावरणादि 8 कर्म

नोकर्म

- जो कर्म का फल देने में कारण बनते हैं, ऐसे बाह्य चेतन-अचेतन पदार्थ। जैसे शरीर, स्त्री, मकान आदि

www.JainKosh.org

www.fppt.info

परमात्मा बनने से क्या लाभ है?

अनंत काल तक
पूर्ण निराकुल
सुख की प्राप्ति

www.JainKosh.org

www.fppt.info

क्या बहिरात्मा बनने से कोई लाभ है?

www.JainKosh.org

www.fppt.info

बहिरात्मपना छोड़ना चाहिये क्योंकि

इसके कारण से ही
जीव अनादि काल से
संसार में दुख भोग
रहा है

www.JainKosh.org

www.fppt.info

बहिरात्मा को जानने से लाभ

यह दशा मुख्य रूप से अपने श्रद्धा गुण की विपरीत परिणति है,

अत: इसे नष्ट करने के लिये मुख्यरूप से श्रद्धा गुण को ही सम्यक करना होगा,

अन्य गुणों में या बाह्य पदार्थों में परिवर्तन से यह दशा प्रगट नहीं होगी

www.JainKosh.org

www.fppt.info

बहिरात्मा को जानने से लाभ

यह दशा किसी परपदार्थ, कर्म या शरीर के कारण नहीं, बल्कि अपनी विपरीत मान्यता से है

यह जानकर उनमें एकत्व, कर्तृत्व, भोक्तृत्व, ममत्व का भाव समाप्त हो रत्नत्रय प्रगट होता है

www.JainKosh.org

www.fppt.info

अन्तरात्मा का स्वरूप समझने से क्या लाभ है?

- अन्तरात्मा से मोक्ष का प्रारंभ होता है, यह जानकर हम अंतरात्मा बनने का प्रयास करते हैं
- यह साधक दशा है,साध्य नहीं, अतः इसी में संतुष्ट न होकर परमात्मा बनने के लिये प्रयासशील रहते हैं
- 4 से 12 गुणस्थान तक के जीव अन्तरात्मा ही है, यह जानने पर चारित्र की अपेक्षा अंतर होने पर भी उनकी विराधना का भाव नहीं आता

www.JainKosh.org

www.fppt.info

हेय उपादेय विचार

हेय

- = छोड़ने योग्य

उपादेय

- = ग्रहण करने योग्य

www.JainKosh.org

www.fppt.info

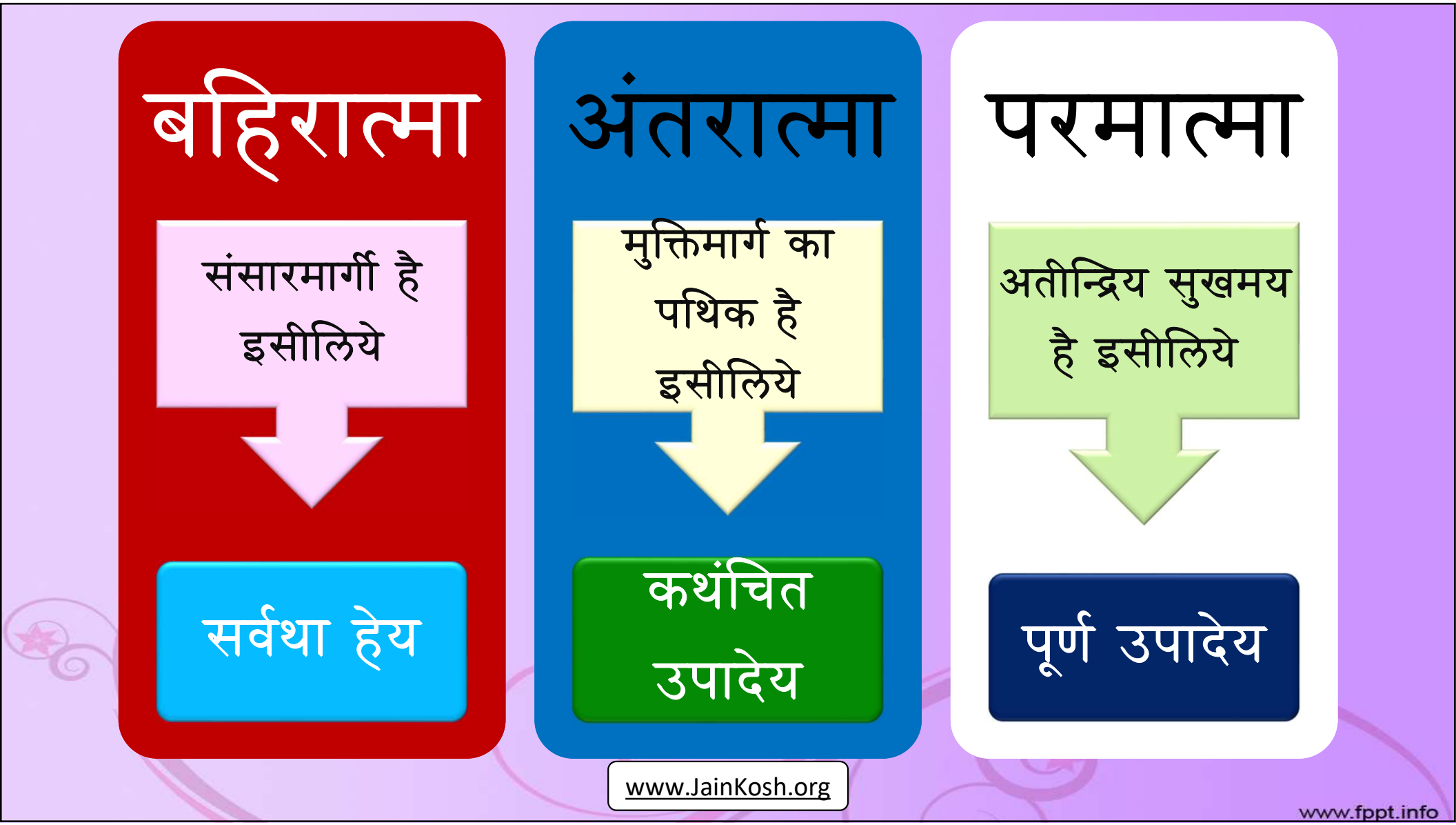

बहिरात्मा

संसारमार्गी है इसीलिये

सर्वथा हेय

अंतरात्मा

मुक्तिमार्ग का पथिक है इसीलिये

कथंचित उपादेय

परमात्मा

अतीन्द्रिय सुखमय है इसीलिये

पूर्ण उपादेय

www.JainKosh.org

www.fppt.info